International Journal of Information Movement Vol.I Issue VI (October 2016)
Website: ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 103-106

वाल्मीकि रामायण में धार्मिकता

डॉ. नैनसी
कुरुक्षेत्र

संस्कृत साहित्य के धरातल पर अनेक रचनाएँ हुई हैं। उन रचनाओं में से एक उत्कृष्ट रचना वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण है। रामायण हिन्दू संस्कृति का परमोत्कृष्ट ग्रन्थ है, जिसमें व्यक्ति के कर्त्तव्यों और अकर्तव्यों की विवरण मिलता है, इसलिए हमें रामायण को धार्मिक ग्रन्थ मानते हुए, जीवन का सारभूत स्त्रोत भी मानते हैं। इसका अनुसरण करते हुए, हमें अपने आचरण में कोई समस्या नहीं आ सकती। वाल्मीकिय रामायण पर अनेक शोध-प्रबन्ध प्रकाशित हो चुके हैं किन्तु इस पतित पावनी अवगाहन से नित्य नवरत्न निकाले जा सकते हैं। आदिकवि की रचना द्विआयामी सपाट चित्र नदी को सामने से देख लिया और समूचा समझ में आ गया। इस बहुआयामी रचना के विभिन्न कोणों से चित्र खींचने अभी शेष हैं। राम जैसा आदर्श चरित्र अन्यत्र नहीं मिलता। वे सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। राम का व्यक्तित्व हमारे लिए अधिक उन्नायक तभी हो सकता है जब हम यह जानें कि किन परिस्थितियों में ऐसा आदर्श व्यक्तितव विकसित हो सका। अन्य परिस्थितियों के साथ-साथ उस काल के धर्मशास्त्र को जानना भी अत्यन्त आवश्यक है राम किन संस्कारों में पले बढे? कैसी शिक्षा प्राप्त की? समाज की संरचना क्या थी? राजधर्म के सिद्धांत क्या थे जिनके चलते रामराज्य आदर्श राज्य का पर्याय बन गया। न्याय व्यवस्था कैसी थी? दाय भाग से सम्बन्धित कौन-कौन से सिद्धांत विकसित हो गए थे? धर्म साधना के लिए लोग किन-किन उपकरणों को प्रयोग में लाते थे? पाप-प्रायश्चित की अवधारणा कैसी थी? वाल्मीकि रामायण में धार्मिक शास्त्रों का उद्देश्य मानव के उदिप्त गुणों का प्रत्यारोपण करता है इस उद्देश्य में रामायण में निस्सन्देह भारी सफलता पाई है।

ऋग्वेद काल में उत्तरी भारत में सिमटे आर्य अब धुर दक्षिण में पहुँच गए। आर्य राजा वेदों के अनुयायी थे तथा राजा के लिए आवश्यक था कि वह छहों अंगों सहित वेदों में पारड.गत हो स्थान-स्थान पर यथाविधि यथाशास्त्रम् शास्त्रत: और विधिपूर्वक शब्दों का प्रयोग प्रमाणित करता है कि सभी धार्मिक कृत्य वैदिक रीति से सम्पन्न किए जाते थे। सगर, अम्बरीष दशरथ, राम और रावण आदि राजाओं ने अश्वमेघ जैसे भव्य यज्ञों का अनुष्ठान किया था। इन यज्ञों का विस्तृत ब्यौरा रामायण में मिलता है। यज्ञों के अनुष्ठान से ही राजा यश और गौरव प्राप्त करते थे यज्ञ-सम्बन्धी सामग्री का भी विस्तार से वर्णन मिलता है। स्थान-स्थान पर यज्ञसम्बन्धी उपमाएँ देखी जा सकती हैं दशरथ ने जब वचन देकर भी राम लक्ष्मण विश्वामित्र को न सौंपे तो महर्षि की कोपाग्नि आहुति डालने से प्रज्जवलित हुई यज्ञाग्नि की भांति प्रखर हो गई। रावण की अशोकवाटिका में कैद शोकमग्ना सीता की तुलना अपवित्र व्यक्तियों के स्पर्श से अशुद्ध हुई वेदी से दी गई है। अनख्यी की सेना हुताग्नि में डाले गए हव्य की भांति रावण के पराक्रम के समक्ष नष्ट हो गई। अत: यज्ञों का लोकप्रिय और व्यापक प्रचलन होना लक्षित होता है। रामायण काल को यज्ञ-बाहुल्य का कहना अनुचित न होगा। राक्षसों में यज्ञों के व्यापक प्रचलन को देखते हुए उन्हें आर्येतर या अनार्य जाति मानने का ठोस आधार शेष नहीं रहता।

इस प्रकार धार्मिक क्रिया-कलाप इस काल में प्राय: अपरिवर्तनीय रहे। धर्म की सत्ता सर्वोपरि थी। धर्मानुसार प्रजा-पालन, धर्मानुसार, न्याय-वितरण, धर्मानुसार कर निर्धारण सभी कुछ धर्मानुसार था। किन्तु भौतिक दृष्टि से देखा जाए तो पर्याप्त अन्तर दृष्टिगोचर होगा। ऋग्वेद कालीन सभ्यता ग्रामीण सभ्यता थी जबकि रामायण में नागरिक सभ्यता के दर्शन होते हैं। वाल्मीकि ने अयोध्या, राजगृह, किष्किन्धा और लंका जैसी सुसमृद्ध और सुरुचिपूर्ण ढंग से बसाई गई महापुरियों की बड़े उत्साह से वर्णन किया है। मनु, विश्वकर्मा और मय जैसे प्रख्यात स्थापतियों ने इनका निर्माण किया था।

राजा और उसके सहयोगियों में भी परिवर्तन हो गया था। राजा का पद आनुवांशिक हो गया था यद्यपि प्रजा की अनुमति लेना आवश्यक था। किन्तु वैदिक युग जैसी निर्वाचन पद्धति का ह्रास हो गया था वैदिक युग की सभा समिति का स्थान मन्त्रियों और अमात्यों की परिषद् ने ले लिया था। पुरोहित की हैसियत प्रधानमंत्री जैसी थी। राजा की अनुपस्थितियों में वही राजकार्य सम्भालता था। दशरथ की मृत्यु के बाद शासन की बागडोर वशिष्ठ ने सम्भाली और मन्त्रियों के साथ मिलकर नए राजा को नियुक्त किया। इन्हें राजकर्त्तारः कहा गया है। इस प्रकार शक्तिशाली मन्त्रिपरिषद् के रहते राजा कभी भी स्वेच्छाचारी और निरंकुश नहीं हो पाता था। राजा को प्रजा का वेतनभोगी सेवक समझा जाता था और वह प्रजाहित के लिए सर्वस्व त्याग को तत्पर रहता था वह संविधान का निर्माता नहीं था, अपितु उसका कार्य उसे कार्यान्वित करना मात्र था। प्रजातन्त्र की उक्त परम्पराओं के चलते वह मर्यादित राजतन्त्र एक प्रकार से प्रजातन्त्र ही था।

वर्णाश्रम व्यवस्था का पालन करवाना राजा का कर्त्तव्य समझा जाता था। शम्बूक वध को देखते हुए कहा जा सकता है कि वर्णव्यवस्था पूर्ववर्ती काल की अपेक्षा कठोर हो गई थी। किन्तु विश्वामित्र के वृतान्त से विदित होता है कि वर्ण परिवर्तन सम्भव था। विवाह आदि संस्कारों को वैदिक रीति से सम्पन्न किया। विवाह युवक और युवती का होता था। स्मृति युग की भांति बालक-बालिका का नहीं।

चोरी, राजद्रोह और व्यभिचार आदि के लिए मृत्युदण्ड के विधान को देखते हुए कहा जा सकता है कि दण्ड व्यवस्था अपेक्षाकृत कठोर हो गई थी। करों का भार मुख्यतः वैश्य वहन करते थे। किन्तु कर-भार अधिक नहीं था। राजा को प्रजा अपनी आय का छठा भाग बलि रूप में देती थी। इन्हीं तथ्यों से स्पष्ट होता है कि रामायण में अनेक स्थानों पर धार्मिकता का प्रयोग अधिक मिलता है।

उपसंहारः

संस्कृत वाङ्.मय में आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित अद्भुत रचना रामायण जिसमें सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक पारिवारिक सभी सभी प्रकार की तथ्यों का समावेशन स्वत: ही मिलता है। परन्तु युग की परिवर्तन शिला के अनुसार धार्मिकता का विशेष रूप से बोलबाला रहा है। सात काण्डों में विभक्त रामायण के द्वारा सामाजिकता का जो पाठ जनबोध को पढ़ाया जाता है वो उनके जीवन की आधारशिलाभूत है। धार्मिकता की दृष्टि से ऋषिमुनियों व छोटों के प्रति बड़ों का आदरसम्मान देना, वर्णव्यवस्था के अन्तर्गत आए हुए तथ्यों को इस पत्र में सम्पादित किया गया है।

सन्दर्भ सूची:

1. बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी, दसवां संस्करण, 1978
2. रामायण तिलक शिरोमणि तथा भूषण टीकाओं सहित, गुजराती प्रिन्टिंग प्रेस 1912–20
3. वाल्मीकि रामायण – गीताप्रेस, गोरखपुर, सातवाँ संस्करण
4. पी.वी. काणे – धर्मशास्त्र का इतिहास अनुवादक : अर्जुन चौबे कश्यप, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, तृतीय संस्करण 1980